शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बींसवी शताब्दी के संस्कृत नाटक

प्राप्तिः 03.06.2022
स्वीकृतः 10.06.2022

50

डॉ० सुखनन्दन त्यागी
प्रधानाचार्य
राम सहाय इण्टर कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *sukhaanandantyagi@gmail.com*

सारांश

काव्यकला, कला की चरम परिणति है और काव्य की अत्यन्त रमणीय विधा है नाटक। वस्तु नेता तथा रस के आधार पर इस रमणीय काव्य के दस भेद तथा अठारह उपभेद किये गये हैं। रस आनन्द एवं उसके परिपाक के लिये नाट्याचार्यों ने नाना गतियाँ बतलायी हैं, जिनमें हस्त, पाद दृष्टि आदि परिगणित हैं। चाक्षुष प्रत्यक्ष होने के कारण रसात्मक वाक्यरूप काव्य 'दृश्य' कहा जाता है, वही उसके अभिनेता में अभिनेय रामादि चरित्रों के रूप में आरोप के कारण 'रूपक' माना गया है। इन अभिनय चातुर्य के कारण एक ऐसी स्थिति उपस्थित हो जाती है और हम यह भी भूल जाते हैं, कि हम नाट्यशाला में बैंठे हैं अथवा नाट्यशाला हमारे चारों ओर। इस प्रकार 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' उक्ति पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरतमुनि ने इस रमणीयता को ध्यान में रखते हुए ही ऋग्वेद से पाठ्य–सामग्री, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रसों को ग्रहण करके ब्रह्मा की सृष्टि 'नाट्यवेद' नामक 'पंचमवेद' की उत्पत्ति का वर्णन किया है। अतः दृश्य श्रव्य होना तथा वस्तु की साकारता को प्रदर्शित करना ही नाटक की गरिमा है। आदि नाट्य प्रणेता भरतमुनि का मत है कि–'नाटक शोकाकुल एवं श्रमातुर जनों के लिये शान्ति प्रदान करने वाला होता है।

विषय विस्तार के भय से इनका संक्षिप्त परिचय देना ही उपयुक्त होगा, जो इस प्रकार है–

परिजातहरणनाटकम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री रामनाथ शिरोमणि है। इस नाटक की रचना सन् १९०२ ई0 में हुई तथा प्रकाशन १९०४ में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में कृष्ण–रूक्मिणी प्रसंग के परिजातहरण की पौराणिक कथा को निबद्ध किया गया है।

पार्वतीपरिणयम्

श्री शंकर लाल महेश्वर ने इस नाक की रचना सन् १९०२ ई0 में ही की थी। इसका प्रकाशन सन् १९११ ई0 तथा सन् १९१९ ई0 में हुआ। इस नाटक में पॉच अंक हैं। यह भी पौराणिक नाटक है। इसमें पार्वती और शिव के विवाह की झॉकी प्रस्तुत की गयी है।

गणेशपरिणयम्

सात अंकों में पार्वती सुत गणेश के विवाह को काल्पनिक ढंग से प्रस्तुत करने वाले श्री वैद्यनाथ शर्मा ने इस नाटक की रचना सन् १६०४ ई0 में की थी। इसका प्रकाशन सन् १६६० ई0 में काशी से हो चुका है। यह भी पौराणिक नाटक है।

चैत्रयज्ञम्

सन् १६०४ ई0 में रचे गये इस नाटक के रचयिता श्री वैद्यनाथ वाचस्पति भट्टाचार्य हैं। पॉच अंकों वाले इस नाटक में दस यज्ञों की कथा वर्णित है। इस नाटक का प्रकाशन सन् १६०७ ई0 मैसूर से हुआ है।

कृष्णचन्द्राभ्युदयम्

महामहोपाध्याय शीघ्रकवि शंकरलाल शास्त्री ने इस नाटक की रचना की। इसमें पॉच अंक हैं। इस नाटक की रचना सन् १६०४ ई0 में की गयी तथा इसका प्रकाशन बम्बई से सन् १६६३ ई0 में हुआ है। इस नाटक में एक योग्य सारथी, उचित परामर्शदाता, मित्र, राजदूत, महान् योद्धा, भक्तवत्सल तथा संसार के सबसे बड़े दार्शनिक श्रीकृष्ण के चरित्र को नव्य रीति से प्रस्तुत किया गया है।

कमलाविजयनाटकम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री वेंकटरमणाचार्य हैं। इस नाटक की रचना सन् १६०६ ई0 में हुई थी। इसका प्रकाशन मैसूर से सन् १६३८ ई0 में हो चुका है। इस नाटक में ब्रह्मा तथा कमला के प्रणय–प्रसंग को चित्रित कर, सतीत्व महिमा को मुखरित किया गया है।

अमरमंगलम्

आठ अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 पंचानन तर्करत्न हैं। यह नाटक सन् १६१३ ई0 में लिखा गया और इसका प्रकाशन सन् १६३७ ई0 में वाराणसी से हुआ। इस नाटक में महाराणा प्रताप के वीर पुत्र अमरसिंह की चितौड़–विजय विषयक देशभक्तिपूर्ण शौर्यकथा को अंकित किया गया है।

अबदलमर्दनम्

सात अंकों में सम्पन्न होने वाले इस नाटक के प्रणेता श्रीचिन्तामणि रामचन्द्र शर्मा 'सहस्त्रबुद्धे' हैं। इसकी रचना सन् 1916 ई0 में की गयी। इसका प्रकाशन सन् 1916 ई0 में ही बंगलौर से हो चुका था। इस नाटक में छत्रपति शिवाजी की शौर्यपूर्ण गाथा को अंकित किया गया हैं।

रतिविजयम्

सन् १६१६ ई0 में रचे गये तथा सन् १६२१ ई0 में बम्बई से प्रकाशित इस नाटक के रचयिता श्री के0एस0 रामस्वामी शास्त्री हैं। पॉच अंकों वाले इस नाटक में कालिदास के 'कुमारसम्भवम्' की रतिकथा को नूतन ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रतापविजयम्

श्री मूलशंकर माणिकलाल 'याज्ञिक' प्रणीत इस नाटक में नौ अंक हैं। इसकी रचना सन् १६२६ ई0 में हुई तथा सन् १६३१ ई0 में प्रयाग से इसका प्रकाशन हो चुका है। इस नाटक में मेवाड़ नरेश महाराणा प्रताप के शौर्य को रूपकायित किया गया है।

प्रतिराजसूयम्

पवित्र नामक सोमयज्ञ से आरम्भ होने वाले और सौत्रामणि से समापन होने वाले 'राजसूय' नामक यज्ञ में विजयी होने वाले युधिष्ठिर के धर्मपरायण चरित्र को मुखरित करने वाले इस नाटक के

प्रणेता श्रीमन्महालिंग शास्त्री हैं। इसमें सात अंक हैं और इसकी रचना सन् १६२८ ई0 में हुई है। इसका प्रथम संस्करण १६२६ ई0 में मद्रास से प्रकाशित हुआ था जो सर्वथा अनुपलब्ध है। अगस्त १६५७ ई0 में साहित्य चन्द्रशाला, पूना से प्रकाशित होने वाला द्वितीय संस्करण सहज उपलब्ध है।

संयोगितास्वयंवरम्

हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तथा राजकुमारी संयोगिता के प्रणय प्रसंग को आधार मानकर सन् १६२८ ई0 में एक मूलशंकर माणिकलाल 'याज्ञिक' ने ''संयोगितास्वयंवरम्'' नामक नाटक की रचना की। सात अंकों वाले इस नाटक का प्रकाशन सन् १६५० ई0 में बड़ौदा से हुआ हैं।

वीरप्रतापनाटकम्

महाराणा प्रताप के जीवन की शौर्यपूर्ण गाथा को सात अंकों में चित्रित करने वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित हैं। यह नाटक सन् १६२६ ई0 में रचा गया और सन् १६३८ ई0 में लवपुर (लाहौर) पंजाब से प्रकाशित हुआ है।

वीरपृथ्वीराजविजयनाटकम्

पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित प्रणीत छह अंकों वाले इस दुःखान्त नाटक में हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जीवनगाथा को पूर्णतः चित्रित किया गया है। यह नाटक सन् १६२६ ई0 में रचा गयां इसका प्रकाशन सन् 11६३८ ई0 में पंजाब से हुआ है।

छत्रपतिसाम्राज्यम्

दस अंकों में शिवाजी के चरित्र रूपी कथ्य को समेटने वाले ऐतिहासिक 'छत्रपतिसाम्राज्यम्' नामक नाटक के प्रणेता स्व0 मूलशंकर माणिकलाल 'याज्ञिक' हैं। यह नाटक सन् १६२६ ई0 में रचा गया और उसी वर्ष बड़ौदा से प्रकाशित भी हुआ है।

दुर्गाभ्युदयनाटकम्

सात अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 छज्जूराम शास्त्री हैं। यह नाटक सन् १६२६ ई0 में रचा गया और सन् १६३१ ई0 में दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।

शंकरविजयनाटकम्

छह अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित हैं। यह नाटक सन् १६३१ ई0 में लिखा गया और उसी वर्ष पंजाब से प्रकाशित भी हुआ। इस दार्शनिक नाटक में तर्क के माध्यम से शंकर के भिन्न–भिन्न प्रतिपक्षों के साथ हुए वाद–विवाद की चर्चा की गयी है तथा अन्त में शंकर की विजय भी दर्शयी गयी है।

अद्भुतांशुकनाटकम्

कौशिकवंशीय श्री जग्गू बकुल भूषण ने आठ अंकों वाले इस नाटक की रचना सन् १६३१ ई0 में की थी, जिसका प्रकाशन सन् १६३३ ई0 में प0 बंगाल से हुआ। इस नाटक की रचना महाभारत के आख्यान पर आधष्त 'वेणीसंहार' के पूर्व की कथा को आधार मानकर की गयी है।

भारतविजयनाटकम्

पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित ने सात अंकों वाले इस नाटक की रचना सन् १६३७ ई0 में की थी। इसका प्रकाशन सन् १६४८ ई0 में लखनऊ से हुआ है। इस नाटक में भारत भूमि की रक्षा हेतु मर मिटने वाले अमर वीर शहीदों की शौर्य गाथा को चित्रित किया गया है।

कलिप्रादुर्भावम्

सात अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री वाइ0 महालिंग शास्त्री हैं यह नाटक सन् १९३९ ई0 में तंजौर से प्रकाशित हुआ। इस नाटक में मनुष्य पर पड़ने वाला कालियुग का प्रभाव प्रस्तुत किया गया है।

भक्तसुदर्शनम्

छः अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित हैं इसकी रचना सन् १९४२ ई0 में की गयी। इसका प्रकाशन सन् १९४५ ई0 में पंजाब से हो चुका है। इस नाटक का इतिवृत्त देवीभागवतम् के तृतीय स्कन्ध के १२ अध्यायों से ग्रहण किया गया है। इसमें भवानी दुर्गा के परम भक्त राजकुमार सुदर्शन की चरितगाथा को चित्रित किया गया है।

वंगीयप्रतापम्

आठ अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री हरिदास सिद्धान्तवागीश हैं। यह नाटक सन् १९४२ ई0 में रचा गया और इसका प्रकाशन सन् १९४५ ई0 में कलकत्ता से हुआ। इसमें जैसोर नरेश विक्रमादित्य के पुत्र प्रतापादित्य की शौर्यपूर्ण जीवनगाथा को चित्रित किया गया है।

भूभारोद्धरणम्

पॉच अंकों वाले इस नाक के प्रणेता पं0 मथुराप्रसाद दीक्षित हैं। सन् १९४३ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९४५ ई0 में पंजाब से हुआ है। इस नाटक में गान्धारी के शाप से एक ही दिन में हुए सम्पूर्ण यादव वंश के विनाश की कथा वर्णित है।

उद्गातृदशाननम्

इस नाटक के प्रणेता श्री वाइ0 महालिंग शास्त्री हैं सन् १९४३ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५८ ई0 में तंजौर से हुआ है। इस नाटक में लंकेश्वर रावण के शौर्यपूर्ण कार्यों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें सात अंक हैं।

मेवाड़प्रतापम्

छः अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री हरिदास सिद्धान्तवागीश हैं। सन् १९४४ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९४७ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में मेवाड़धरानरेश महाराणा प्रताप के पराक्रम एवं शौर्यपूर्ण कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

शिवाजीचरितम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री हरिदास सिद्धान्तवागीश हैं। सन् १९४५ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५४ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में शिवाजी के राजतिलक पर्यन्त कथ्य को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

नारीजागरणम्

सात अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पं0 श्री गोपाल शास्त्री 'दर्शनकेसरी' हैं। सन् १९४५ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६६ ई0 में हुआ है। इस नाटक में जनहित, देशोन्नति, सत्साहित्य का विकास तथा समाज सुरक्षा की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए नाटककार ने 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का उद्घोष किया है।

सुभाषसुभाषम्

छः अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्र विमल चौधरी हैं। सन् १९४८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५४ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के वीरभावों तथा शौर्यपूर्ण कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

लक्ष्मीस्वयंवरम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता डॉ0 वी0 राघवन् हैं। सन् १९४८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन १९५२ ई0 में वाराणसी से हुआ है। इस नाटक में ऐश्वर्योन्मत्त देवेन्द्र की पराजय तथा भगवान् विष्णु द्वारा लक्ष्मी को वरण करने की कथा प्रस्तुत की गयी है।

ययातिदेवयानीचरितनाटकम्

सत अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री वल्लीसहाय कवि हैं। सन १९५०ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६६ ई0 में तंजौर से हुआ है। इस नाटक में पौराणित ययाति और देवयानि की प्रथम कथा को मुखरित किया गया है।

परिवर्तनम्

पॉच कों वाले इस नाटक के प्रणेता डॉ0 कपिल देव द्विवेदी आचार्य है। सन् १९५० ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५२ ई0 में लखनऊ से हुआ है। इस नाटक में जनहृदयों में जागृत होने वाली स्वाभाविक क्रान्ति को प्रस्तुत किया गया है।

काश्मीरसन्धानसमुद्यम

आठ अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री नीरपपाजें भीमभट् हैं सन् १९५२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५४ ई0 में बंगलौर से हुआ है। इस नाटक में कश्मीर की नैसर्गिक सुषमा का मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

भारतविवेकम्

बारह अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं सन् १९५२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५७ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में स्वामी विवेकानन्द के साहसिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

क्रान्तियुद्धम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री वासुदेव शास्त्री वागेवाडीकर हैं। सन् १९५२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५८ ई0 में पूना से हुआ है। इस नाटक में भारतीय स्वातन्त्रय समर की कथा को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

हैदराबादविजयम्

दस दृश्यों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री नीरपाजे भीमभट् हैं। सन् १९५२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सनं् १९५४ ई0 में बंगलौर से हुआ है। इस नाटक में स्वतन्त्र भारत के केन्द्रीय शासन तथा हैदराबाद के निजाम के मध्य हुए सैन्य संघर्ष की कथा को प्रस्तुत किया गया है।

देशबन्धुप्रियम्

दस अंकों वाले इस नाटक के रचयिता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९५६ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५९ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में देशबन्धु चित्तरंजनदास के देशभक्ति पूर्ण कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

भारतलक्ष्मी

दस अंकों वाले इस रूपक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९५७ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९५९ ई0 में कलकत्ता से हुआ है इस नाटक में वीरांगना 'झॉसी की रानी' लक्ष्मीबाई की शौर्यकथा को रूपकायित किया गया है।

नलदमयन्त्यम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री कालीपादाचार्य हैं। सन् १९५८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६० ई0 में मैसूर से हुआ हैं। महाभारत के वनपर्व के ५०–७८वें अध्यायों तक की कथा 'नलोपाख्यान' पर आधृत राजा नल तथा भीमसुता दमयन्ती के प्रणय–प्रसंग को इस नाटक में चित्रित किया गया है।

महिमामयभारतम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९५८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६० ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में भारतवर्ष की अतीतकालीन तथा वर्तमानकालीन महिमा और गरिमा को प्रस्तुत किया गया है।

भारतहृदयारविन्दम्

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं सन् १९५८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६० ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इसमें राष्ट्रभक्त श्री अरविन्द के राष्ट्रीय भावों को प्रस्तुत किया गया है।

भास्करोदयम्

पन्द्रह अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९५८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६१ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में कवीन्द्र रविन्द्र नाथ टैगोर की जीवन कथा को वर्णित किया गया है।

मेलनतीर्थम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९५९ ई0 लिखे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६१ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में अथर्वा ऋषि, अगस्त्य मुनि, सम्राट् अशोक, अकबर, स्वामी विवेकानन्द, टैगोर, गॉधी और नेहरू आदि के विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

भारतजनकम्

सोलह अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्र विमल चौधुरी है। सन् १९६० ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६० ई0 में ही हो चुका है। इस नाटक में महात्मा गॉधी के जीवन–संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

आनन्दराधवम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री यतीन्द्रविमल चौधुरी हैं। सन् १९६१ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६२ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६२ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में राधा और कृष्ण के किशोर प्रेम की छवि को अंकित किया गया है।

पाणिनीयनाटकम्

नौ दृश्यों वाले इस नाटक के प्रणेता श्रीगोपाल शास्त्री 'दर्शनकेसरी' है। सन् १९६२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६४ ई0 में वाराणसी से हुआ है। इस नाटक में महर्षि पाणिनी कष्त व्याकरण शास्त्र की महत्ता को निरूपित किया गया है।

देशदीपम्

नौ दृश्यों वाले इस नाटक की प्रणेत्री श्रीमती रमा चौधुरी हैं। सन् १९६३ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६५ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इस नाटक में अमर वीर शहीद, एक कृषक पुत्र तथा युवा छात्र की राष्ट्रभक्ति को प्रस्तुत किया गया है।

चाणक्यविजयम्

सात अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री विश्वेश्वर विद्याभूषण काव्यतीर्थ है। सन् १९६६ ई0 में लिखे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९६६ ई0 में ही हो चुका है। इस नाटक में आचार्य चाणक्य के साहसिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

सुसंहतभारतम्

छः अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता पुल्लेल श्री रामचन्द्र रेड्डी हैं। सन् १९६२ ई0 में लिखे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९७२ ई0 में सागर से हुआ है। इस नाटक में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्थिति को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

श्रीकृतार्थकौशिकम्

छः अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता स्व0 श्रीकृष्ण जोशी हैं। सन् १९६९ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९७५ ई0 में लखनऊ से हो चुका है। इस नाटक में पुरातन भारतीय नरेश गाधि तथा उसके पुत्र विश्वामित्र (कौशिक) के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है।

शंकरशंकरम्

पाँच अंकों वाले इस नाटक की प्रेणेत्री श्रीमती रमा चौधुरी हैं। सन् १९७० ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९७२ ई0 में कलकत्ता से हुआ है। इसमें शिवजी के भोलेपन तथा उनके प्रति श्रद्धा–भक्ति को प्रकट किया गया है।

विवेकानन्दविजयम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता डॉ0 श्रीधर भास्कर वर्णेकर हैं। दिनांक ४ जुलाई १९७१ ई0 को इस नाटक की रचना हुई। इस नाटक का प्रकाशन विवेकानन्द शिला स्मारक समिति (मद्रास) द्वारा सन् १९७२ ई0 में हुआ। इस नाटक में स्वामी विवेकानन्द का अमेरिका आदि देशों में धर्म प्रचार कर भारत प्रत्यागमन वर्णित है।

बांग्लादेशोदयम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री रामकृष्ण शर्मा हैं। सन् १९७२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९८० ई0 में दिल्ली से हुआ है। इस नाटक में बांग्लादेश के उदय की घटना को प्रस्तुत किया गया है।

छत्रपतिः श्रीशिवराजः

पॉच अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्रीराम भि0 वेलणकर हैं। सन् १९७३ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९७४ ई0 में बम्बई से हुआ है। इस नाटक में शिवाजी के अदम्य उत्साह एवं शौर्य को चित्रित किया गया है।

शिवराजाभिषेकम्

सात अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता डॉ0 श्रीधर भास्कर वर्णेकर हैं। सन् १९७४ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९७४ ई0 में ही पूना से हुआ है। इस नाटक में छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक महोत्सव की घटना को प्रस्तुत किया गया है।

सेतुबन्धम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री हैं। सन् १९७९ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९८० ई0 में बरेली से हो चुका है। इस नाटक में विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्मों के सागरों पर सेतु निर्माण का कार्य दर्शाया गया है।

अभिनवहनुमन्नाटकम्

नौ अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता डॉ0 रमेश चन्द्र शुक्ल हैं सन १९८२ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९८२ ई0 में ही दिल्ली देववाणी परिषद् आर–6 वाणी विहार, नयी दिल्ली 110059 से हुआ है। इस नाटक में पवनपुत्र हनुमान् की शालीनता, शौर्यसम्पन्नता तथा निर्भीकता को नूतन ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मेनकाविश्वामित्रम्

आठ अंकों वाले इस नाक के प्रणेता डॉ0 हरिनारायण दीक्षित हैं। सन् १९८३ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९८४ ई0 में दिल्ली से हुआ है। इस नाटक में राजर्षि विश्वामित्र तथा अप्सरा मेनका की प्रणय–कथा को प्रस्तुत किया गया है।

अनसूयाचरितनाटकम्

नौं अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री विष्णुदत्त त्रिपाठी हैं। सन् १९८४ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९८४ ई0 में वाराणसी से हुआ है। इस नाटक में महर्षि अत्रि की पत्नी अनसूया के माध्यम से सांस्कारिक धार्मिक तत्वों की शिक्षा प्रदान की गयी है।

कर्णाभिजात्यम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री हैं। सन् १९८८ ई0 में रचे गये इस नाटक का प्रकाशन सन् १९९० ई0 में बरेली से हुआ है इस नाटक में कर्ण की उत्पत्ति तथा तन्निमित्त हुए, आभिजात्यादि संस्कारों को प्रस्तुत किया गया है।

शिञ्जिनीयम्

दस अंकों वाले इस नाटक के प्रणेता श्री अ0सी0 सुब्बुकृष्ण श्रौती हैं। इस नाटक का प्रकाशन ए0एस0 पावकी श्रीनिवासन् ने १९९० ई0 में मद्रास से किया है। इस नाटक में तमिल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'शिलप्पदिकरम्' की कथावस्तु को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बींसवी शताब्दी में संस्कृत नाटक की अनेक नयी विधाएँ भी प्रकाशित हुईं। इनमें रेडियोनाटक या ध्वनिरूपक तथा एकांकियों का विशेष स्थान हैं। इस युग में लम्बे नाटकों की अपेक्षा लघु नाटक–नाटिकाएँ अधिक लोकप्रिय हुए। इनका आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण तथा विविध मंचों पर मंचन भी हो चुका है। डॉ0 रेवाप्रसाद द्विवेदी, पं0 ओगटि परीक्षित शर्मा, डॉ0 बी0आर0 शास्त्री, डॉ0 राजेन्द्र मिश्र 'अभिराज', डॉ0 रमाकान्त शुक्ल, डॉ0 राधा वल्लभ त्रिपाठी, डॉ0 हरिदत्त शर्मा, श्री भि0 वेलणकर, डॉ0 सुधीकान्त भारद्वाज, डॉ0 मथुरादत्त पाण्डेय, डॉ0 भवानीशंकर त्रिवेदी तथा अन्यान्य लेखकों के अनेक संस्कृत नाटक उल्लेखनीय हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने भी 'मरीचिकामारीचनाटकम्' नामक एक पॉच अंको का नाटक लिखा हैं। आशा है, विद्वज्जन बींसवी शती के संस्कृत नाटकों के मूल्यांकन की ओर ध्यान देंगे।

संदर्भ

1. शर्मा, आचार्य पण्डित श्रीराम. (अनु0). (1967). अग्निपुराण. संस्कृत संस्थानः बरेली।
2. शर्मा, चिन्तामणि रामचन्द्र. (1916). अबदलमर्दनम्. सहस्त्रबुद्धेः बंगलौर।
3. चौधुरी, श्री यतीन्द्र विमल. (1962). आनन्दराधम. कलकत्ता।
4. सम्पूर्णानन्द. (1967). आर्यो का आदि–देश. भारती भण्डारः इलाहाबाद, सं0।
5. शर्मा, नारायण नरेन्द्र नाथ. (1976). आश्वलायन–गृह्यसूत्र. ईस्टर्न बुक लिंकर्सः दिल्ली।
6. शास्त्री, वासुदेव. (1957). क्रान्तियुद्वम्. 'वागेवाडीकर'. पूना।
7. शास्त्री, डॉ0 श्रीनिवास. (अनु0). (1971). काव्यप्रकाश. साहित्य भण्डारः मेरठ।
8. हेमचन्द्र., शर्मा, काशीनाथ. (अनु0). (1901). काव्यनुशासन. बम्बई।
9. भामह., शर्मा, देवेन्द्रनाथ. (अनु0). (1162). काव्यालंकार. पटना।
10. याज्ञिक, श्री मूल शंकर माणिकलाल. (1977). छत्रपतिसाम्राज्यम्. इलाहाबाद।
11. व्यास, भोलाशंकर. (अनु0). (1971). दशरूपक. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।
12. लक्ष्मणसूरि. (1977). दिल्ली–साम्राज्यम्. कलकत्ता।
13. भरतमुनि. (संपा0)., चौबे, बाबूलाल. (1970). नाटकशास्त्रम्. वाराणसी।
14. पं0 गोपालशास्त्री. (1966). नारीजागरण–नाकटम्. 'दर्शनकेसरि' चैखम्बाः वाराणसी।
15. (1892). निरूक्त–यास्काचार्य. वेंकटेश्वर प्रेसः बम्बई।
16. माणिकलाल, श्री मूलशंकर. (1979). प्रतापविजयम. 'याज्ञिक'. देवभाषा प्रकाशनः प्रयाग।
17. चौधुरी, श्री यतीन्द्र विमल. भारतजकनम्. प्राच्यवाणीः कलकत्ता।
18. दीक्षित, पं0 मथुरा प्रसाद. (1948). भारतविजयमनाकटम्. लखनऊ।
19. वर्णेकर, श्रीधर भास्कर. (1972). विवेकानन्दविजयम्. लखनऊ।
20. 'दीक्षित', पं0 मथुराप्रसाद. (1961). वीरप्रतापनाकटम्. पंजाब।